IJRAR.ORG E-ISSN: 2348-1269, P-ISSN: 2349-5138

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND ANALYTICAL REVIEWS (IJRAR) | IJRAR.ORG

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारत में शिक्षक शिक्षा में नवाचार प्रथाएं

खुशबू कुमारी, रिसर्च स्कॉलर, शिक्षा विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

डॉ. पुष्पा श्रीवास्तव, प्राचार्य, आरएल महतो शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, रोसरा

अमूर्त

भारत में शिक्षक प्रशिक्षण सर्वप्रथम वैदिक काल में प्रारंभ हुआ था। उस काल में ब्राह्मणों में वरिष्ठ छात्रों को कनिष्ठ छात्रों को पढ़ाने का अवसर दिया जाता था और इस प्रकार उन्हें शिक्षण में प्रशिक्षित किया जाता था। भारत में आधुनिक शिक्षक प्रशिक्षण सबसे पहले यूरोपीय मिशनरियों द्वारा शुरू किया गया था। शुरुआत में उन्होंने छात्रों को विभिन्न विषयों को पढ़ाने में प्रशिक्षित किया लेकिन बाद में उन्होंने प्रशिक्षुओं में शिक्षा और शिक्षण के बारे में कुछ बुनियादी अवधारणाओं को भी विकसित करना शुरू कर दिया। स्कूली शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए शिक्षक शिक्षा प्रणाली एक महत्वपूर्ण वाहन है। देश में शैक्षिक मानकों के उत्थान के लिए शिक्षक शिक्षा प्रणाली का पुनरोद्धार और सुदृढ़ीकरण एक शक्तिशाली साधन है। शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम की गुणवत्ता में सुधार के लिए ऐसे कई मुद्दे हैं जिन पर तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता है। उनमें से एक शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम में नवाचारों की आवश्यकता है। नवीनता का अर्थ है सीमाओं से परे सोचने की क्षमता और कुछ ऐसा बनाना जो पहले से मौजूद से अलग हो। नवाचारों के बिना कोई प्रगति संभव नहीं है। शिक्षकों को नवोन्मेषी होना होगा और उनके प्रशिक्षण की शुरुआत उनके प्रशिक्षण संस्थानों से करनी होगी। शिक्षक शिक्षा में नवाचारों में आईटी साक्षरता, इंटरएक्टिव टेलीकांफ्रेंसिंग आदि शामिल हैं। एनपीई (1986) ने कहा, "शिक्षक शिक्षा की मौजूदा प्रणाली को ओवरहाल या नया रूप देने की आवश्यकता है।" दुर्भाग्य से, भारत में माध्यमिक शिक्षक शिक्षा संस्थानों को काफी हद तक नवीन नहीं बताया गया है। हमारी शिक्षा प्रणाली में कुछ प्रतिरोधी कारक हैं जो शिक्षक शिक्षा संस्थान को नवोन्मेषी होने से रोकते हैं जैसे कि भौतिक सुविधाओं और धन की कमी, शिक्षक प्रशिक्षकों के बीच नवाचारों के प्रसार की कमी, कठोर ढांचा, अनुसंधान उन्मुखीकरण की कमी आदि। यह पत्र एक सिंहावलोकन प्रदान करता है। भारत में शिक्षक शिक्षा में मूल्यांकन का। यह शिक्षा में भारत की मूल्यांकन प्रणाली के विकास और मूल्यांकन/मूल्यांकन की बेहतरी के लिए नीतियों में प्रगतिशील परिवर्तनों पर ध्यान केंद्रित करते हुए परीक्षा में सुधार के उद्देश्य से विधायी नीतियों का पता लगाता है।

कुंजी शब्द: शिक्षक शिक्षा, अभिनव अभ्यास, गुणवत्ता, शैक्षिक मानक, प्रशिक्षण।

परिचय

स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद हमारे देश में शिक्षक शिक्षा के विस्तार के लिए प्रयास शुरू हुआ। शिक्षक की मांग को पूरा करने के लिए शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों की स्थापना की प्रक्रिया शुरू हुई और इसके साथ ही शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सुधार की प्रक्रिया शुरू हुई। इस क्षेत्र में सुधार का सुझाव देने वाला पहला राधा कृष्णन आयोग (1948-49) था।

छात्र असाइनमेंट के माध्यम से तब तक काम करते हैं जब तक कि समूह के सभी सदस्य इसे सफलतापूर्वक समझ और पूरा नहीं कर लेते। किसी राष्ट्र की गुणवत्ता उसके नागरिकों की गुणवत्ता पर निर्भर करती है। नागरिकों की गुणवत्ता शिक्षा प्रणाली की गुणवत्ता पर निर्भर करती है और शिक्षा की गुणवत्ता योजनाकारों, शिक्षाविदों और प्रशासन के संयुक्त प्रयासों पर निर्भर करती है, हालांकि, सबसे महत्वपूर्ण कारक शिक्षकों की गुणवत्ता है। इसका अर्थ है कि उत्कृष्ट और कुशल शिक्षक देश का भाग्य बदल सकते हैं। एक शिक्षक बच्चे की छिपी क्षमताओं को बाहर लाने में मदद करता है। वह प्रकट करता है जो भीतर है, छिपा हुआ है और अप्रयुक्त है। वह / वह स्पष्ट करता है कि छात्रों में क्या निहित है। अतः शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में शिक्षकों का महत्व बहुत अधिक है। माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952-1953) की रिपोर्ट में कहा गया है, "हमें विश्वास है कि चिंतनशील शैक्षिक पुनर्निर्माण में सबसे महत्वपूर्ण कारक शिक्षक, उसके व्यक्तिगत गुण, उसकी शैक्षिक योग्यता, उसका व्यावसायिक प्रशिक्षण और वह स्थान है जो वह समुदाय में रखता है। ।□ यह बहुत सही है कि, "कोई भी व्यक्ति अपने शिक्षकों के स्तर से ऊपर नहीं उठ सकता।" (एनपीई, 1986)। शिक्षक किसी भी संस्था की वास्तविक और गतिशील शक्ति होता है।

इनोवेशन का अर्थ है सीमाओं से परे सोचने की क्षमता और कुछ ऐसा बनाना जो पहले से मौजूद से अलग हो। नवाचारों के बिना कोई प्रगति संभव नहीं है। शिक्षकों की जागरूकता, भागीदारी और प्रतिबद्धता के बिना कोई नवाचार या परिवर्तन लागू नहीं किया जा सकता है। शिक्षकों को नवोन्मेषी होना होगा और उनके प्रशिक्षण की शुरुआत उनके प्रशिक्षण संस्थानों से करनी होगी। नवीन शिक्षक शिक्षा के लिए हमें अपनी शिक्षा प्रणाली का पुनर्निर्माण करना होगा। भारत में शिक्षा व्यवस्था का पुनर्निर्माण स्वतंत्रता के प्रारंभ से ही प्रारंभ हो गया था और शिक्षक शिक्षा में सुधार के प्रयासों का पता उसी काल में लगाया जा सकता है। विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग (1953), शिक्षा आयोग (1964-1966), अंतर्राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा परियोजना टीम (1954), योजना परियोजनाओं पर समिति (1963), भारत में माध्यमिक शिक्षकों का अध्ययन समूह (1964), भारतीय संघ शिक्षक शिक्षकों (1973), शिक्षा की राष्ट्रीय नीति (1986) और राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद (1998) ने वर्तमान समय की आवश्यकताओं को पूरा करने और शिक्षक शिक्षा प्रणाली के सभी पहलुओं को मजबूत करने के लिए भारत में सभी नवाचारों की सिफारिश की है।

शिक्षक शिक्षा में नवाचार प्रथाओं की अवधारणा

शिक्षण सीखने की प्रक्रिया में एक नवाचार, सुधार या विकास का गठन करने के संबंध में देशों के बीच व्यापक भिन्नता है। उदाहरण के लिए, रंगीन चाक और बुनियादी दृश्य-श्रव्य सामग्री के उपयोग को कुछ विकासशील क्षेत्रों में शैक्षिक नवाचार के रूप में माना जा सकता है, जबकि अन्य अधिक समृद्ध देशों में नवाचार परिष्कृत तकनीकों और विधियों, प्रथाओं आदि के विकास और उपयोग को संदर्भित कर सकते हैं। हमारे देश में भी, यह इलेक्ट्रॉनिक तकनीक हमारे समाज के हर क्षेत्र में और हमारे सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन के हर पहलू में नाटकीय रूप से प्रवेश कर चुकी है। आज के बच्चे रिमोट कंट्रोल के साथ बड़े हो गए हैं और वे किताबें पढ़ने से ज्यादा समय कंप्यूटर, इंटरनेट, वीडियो गेम खेलने आदि में बिताते हैं; यहां तक कि खिलौने भी अब बटनों और टिमटिमाती रोशनी से भर गए हैं। ऐसी स्थिति में, "हम इस नई पीढ़ी को कैसे शिक्षित कर सकते हैं?" पर ध्यान देना बहुत

आवश्यक है। इसका उत्तर देने के लिए, एक सहायक वातावरण, जिसमें वे अपने स्वयं के विचार बना सकते हैं; दोनों व्यक्तिगत और सहयोगात्मक रूप से प्रदान किया जाना चाहिए।

व्युत्पन्न रूप से, शब्द "इनोवेशन" से लिया गया है

लैटिन शब्द "इनोवेट" जिसका अर्थ है किसी चीज़ को कुछ नए में बदलना। यह शिक्षा और प्रशिक्षण में नए विचारों और प्रथाओं का प्रचार है। पिछले कुछ वर्षों में शिक्षा सेवाओं के तरीकों और साधनों में जबरदस्त बदलाव देखा गया है। शिक्षकों की गुणवत्ता में सुधार और शिक्षण के सभी स्तरों के लिए उन्हें प्रदान किए जाने वाले प्रशिक्षण में अनुसंधान और नवाचार महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे कक्षा संचालन और अन्य पाठ्यचर्या और सह-पाठयक्रम गतिविधियों में नए विचारों और प्रथाओं को पेश करने की मांग करते हैं। अच्छे नेतृत्व और उपयुक्त शिक्षण विधियों से शिक्षक की प्रभावशीलता को बढ़ाया जा सकता है। कोई भी शिक्षक शिक्षा प्रोग्रामर शिक्षकों को उन सभी स्थितियों के लिए तैयार नहीं कर सकता जिनका वे सामना करेंगे। शिक्षकों को स्वयं अनेक विकल्पों में से अंतिम चयन करना होगा। शिक्षक शिक्षा का उद्देश्य ऐसे शिक्षकों को तैयार करना है, जिनके पास अपनी विविध भूमिकाओं के माध्यम से देश को आगे ले जाने की पेशेवर क्षमताएं हैं।

शिक्षक शिक्षा में कुछ नवीन पद्धतियाँ: निम्नलिखित कुछ नवीन विचार हैं जिन पर ध्यान देने की आवश्यकता है:

1. टीम शिक्षण, सहकारी या सहयोगी शिक्षण प्रक्रिया: जब शिक्षक और छात्रों को इतने सारे प्रतिबंधों के तहत काम करना पड़ता है, तो "टीम शिक्षण या सहकारी या सहयोगी शिक्षण" का अभ्यास हमेशा एक अच्छा विकल्प होता है। टीम शिक्षण या सहकारी सीखने की प्रक्रिया एक टीम वर्क है जहां सदस्य एक सहमत लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए एक-दूसरे का समर्थन करते हैं और भरोसा करते हैं। सहकारी अधिगम एक सफल शिक्षण रणनीति है जिसमें छोटी टीमें, जिनमें से प्रत्येक में क्षमता के विभिन्न स्तरों वाले छात्र होते हैं, किसी विषय की अपनी समझ को बेहतर बनाने के लिए विभिन्न प्रकार की शिक्षण गतिविधियों का उपयोग करते हैं। एक टीम का प्रत्येक सदस्य न केवल जो सिखाया जाता है उसे सीखने के लिए जिम्मेदार होता है बल्कि टीम के साथियों को सीखने में मदद करने के लिए भी जिम्मेदार होता है, जिससे उपलब्धि का माहौल बनता है। छात्र असाइनमेंट के माध्यम से तब तक काम करते हैं जब तक कि समूह के सभी सदस्य इसे सफलतापूर्वक समझ और पूरा नहीं कर लेते।

2. रिफ्लेक्टिव टीचिंग और रिफ्लेक्टिव टीचर एजुकेशन: अपने काम पर रिफ्लेक्शन एक पेशेवर होने का एक प्रमुख घटक है और शिक्षक शिक्षा के लिए आवश्यक है। शिक्षकों को शिक्षण और सीखने के संबंध में अपने विश्वास, धारणाओं और पूर्वाग्रहों की जांच करनी चाहिए और यह निर्धारित करना चाहिए कि ये विश्वास कक्षा अभ्यास को कैसे प्रभावित करते हैं। चिंतन एक प्राकृतिक प्रक्रिया है जो अतीत और वर्तमान व्यवहार के चिंतन से भविष्य की क्रिया के विकास की सुविधा प्रदान करती है। चिंतनशीलता विद्यालयों, कक्षाओं और शिक्षकों की बहु-भूमिकाओं से जुड़े व्यक्तिगत, शैक्षणिक, सामाजिक और नैतिक संदर्भों पर सावधानीपूर्वक विचार करते हुए अभ्यास की आलोचनात्मक जांच और परिशोधन की चल रही प्रक्रिया को संदर्भित करता है।

3. रचनावाद और शिक्षक शिक्षा: रचनावाद की अवधारणा संज्ञानात्मक मनोविज्ञान से विकसित हुई है। रचनावादी प्रतिमान पियागेट, वायगोत्स्की, गार्डनर, डेवी, टोलमैन और कई अन्य लोगों के योगदान पर आधारित है। इस प्रकार, यह सीखने पर कई प्रमुख दृष्टिकोणों का संश्लेषण है। यह माना जाता है कि रचनावादी सिद्धांत का प्रमुख तत्व यह है कि लोग शिक्षक शिक्षा में नवीन अभ्यासों द्वारा सीखते हैं: एक सिंहावलोकन मनीषा दास खंड-□, अंक-□□ मई 2015 17 सक्रिय रूप से अपने स्वयं के ज्ञान का निर्माण, नए ज्ञान की तुलना अपनी पिछली समझ से करना और उसका उपयोग करना ये सभी नई समझ में आने के लिए। रचनावादी शिक्षा सीखने की गतिविधि के बारे में समस्या-समाधान और महत्वपूर्ण सोच में छात्र की सक्रिय भागीदारी पर आधारित है। छात्र अपने पूर्व ज्ञान

और अनुभव के आधार पर विचारों और दृष्टिकोणों का परीक्षण करके, उन्हें नई स्थितियों में लागू करके और पहले से मौजूद बौद्धिक निर्माणों के साथ प्राप्त नए ज्ञान को एकीकृत करके अपने ज्ञान का निर्माण करते हैं। शिक्षक एक सूत्रधार या प्रशिक्षक है जो सीखने की प्रक्रिया के दौरान छात्र की महत्वपूर्ण सोच, विश्लेषण और संश्लेषण क्षमताओं का मार्गदर्शन करता है। शिक्षक भी इस प्रक्रिया में एक सह-शिक्षार्थी है। इसलिए, शिक्षकों को छात्रों को दुविधा पैदा करने वाले विशिष्ट कार्यों के माध्यम से कठिनाइयों को प्रस्तुत करके संज्ञानात्मक परिवर्तन की सुविधा प्रदान करनी चाहिए। इस संदर्भ में, समस्या समाधान शिक्षण प्रक्रिया को छात्रों के मन में एक समस्या को इस तरह से उठाने की प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया जाता है जो एक तर्कसंगत समाधान पर पहुंचने में उद्देश्यपूर्ण, चिंतनशील सोच को प्रोत्साहित करती है।

4. मिश्रित-शिक्षा और शिक्षक शिक्षा: मिश्रित-शिक्षा सीखने के लिए एक दृष्टिकोण का वर्णन करती है जहां शिक्षक प्रौद्योगिकी का उपयोग करते हैं, आमतौर पर वेब-आधारित निर्देश के रूप में, संगीत कार्यक्रम में और लाइव निर्देश के पूरक के रूप में, या शायद एक शिक्षार्थी के घटकों का उपयोग करते हैं। घटकों के साथ केंद्रित वेब पाठ्यक्रम जिसके लिए महत्वपूर्ण प्रशिक्षक उपस्थिति और मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है। एक मिश्रित-सीखने के दृष्टिकोण की ताकत यह है कि यह सुनिश्चित करने के लिए एक साधन प्रदान करता है कि शिक्षार्थियों को समर्थन और मार्गदर्शन मिलता है क्योंकि वे स्वतंत्र शिक्षण कार्य करते हैं। ऐसी सेटिंग्स में वेब का उपयोग संचार चैनलों, सूचना स्रोतों और प्रबंधन उपकरणों के रूप में शिक्षक और छात्रों के लिए कई सामर्थ्य प्रदान करता है। ये पहलू मिश्रित-अधिगम को विशेष रूप से शिक्षक प्रशिक्षण छात्रों के लिए उपयुक्त प्रतीत होते हैं, विशेष रूप से उन बड़े समूहों में जहां प्रत्यक्ष प्रशिक्षक सहायता प्रदान करना मुश्किल हो सकता है। ब्लेंडेड-लर्निंग आमतौर पर सीखने का वर्णन करता है जो सूचना और संचार प्रौद्योगिकियों के साथ पारंपरिक शिक्षण और सीखने के तरीकों को जोड़ता है। यह अनुमान लगाया गया है कि मिश्रित शिक्षा छात्र के सीखने के अनुभव को बढ़ाएगी, साथ ही यह भी मांग करती है कि शिक्षकों को ऑनलाइन सुविधाकर्ता के रूप में प्रशिक्षित किया जाना चाहिए।

5. सॉफ्ट स्किल्स और टीचर एजुकेशन: मानव पूंजी का विकास एक महत्वपूर्ण संपत्ति है क्योंकि यह एक राष्ट्र के विकास को संचालित करता है। गुणवत्तापूर्ण मानव पूंजी सावधानीपूर्वक डिजाइन और सुनियोजित शिक्षा प्रणाली के माध्यम से गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रक्रिया से आती है। सॉफ्ट स्किल व्यक्तिगत विशेषताएं हैं जो किसी व्यक्ति की बातचीत, नौकरी के प्रदर्शन और करियर की संभावनाओं और कठिन कौशल को बढ़ाती हैं जो एक निश्चित प्रकार के कार्य या गतिविधि के लिए विशिष्ट होती हैं। सॉफ्ट स्किल्स व्यक्तित्व लक्षणों, सामाजिक शालीनता और भाषा में प्रवाह, व्यक्तिगत आदतों, मित्रता और आशावाद को संदर्भित करते हैं जो लोगों को अलग-अलग डिग्री तक चिह्नित करते हैं। शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम में सॉफ्ट कौशल व्यापक रूप से लागू होते हैं, इस प्रकार शिक्षक शिक्षा का पाठ्यक्रम समग्र मानव पूंजी के विकास में योगदान कर सकता है जो आर्थिक, सामाजिक और व्यक्तिगत विकास को बढ़ावा दे सकता है। शिक्षक शिक्षा के पाठ्यक्रम में सॉफ्ट स्किल को शामिल करना पेशे की सफलता के लिए आवश्यक है।

शिक्षक शिक्षा के स्तर को ऊपर उठाने की समस्याएँ

किसी भी स्तर पर शिक्षक शिक्षा के मानक में बहुत सारे कारक शामिल होते हैं- इसका उद्देश्य, इसका पाठ्यक्रम, इसकी संस्थाएँ, संस्थानों में कार्यरत शिक्षक और शिक्षक शिक्षा संस्थानों का उत्पाद। इन सबमें सबसे महत्वपूर्ण कारक उत्पाद है। यह शिक्षक शिक्षा के मानक की वास्तविक कसौटी है। जबकि वर्तमान समय में वास्तविकता यह है कि किसी भी स्तर पर शिक्षक शिक्षा का उत्पाद स्तर तक नहीं है। इन संस्थानों से निकलने वाले शिक्षकों के पास शिक्षा और शिक्षण के प्रति न तो अंतर्दृष्टि है और न ही दृष्टिकोण, न ही गतिविधियों में प्रशिक्षण का कौशल।

ईमानदारी और कर्तव्यपरायणता की कमी देश की एक स्थानिक बीमारी बन गई है, और अगर यह इन संस्थानों से निकलने वाले शिक्षकों के बीच पाई जाती है, तो इसके लिए वे नहीं बल्कि पूरे समाज और नियंत्रक एजेंसी को दोषी ठहराया जाना चाहिए।

शिक्षक शिक्षा प्रणाली में नवाचार के पहल कदम:

एनपीई (1986) ने कहा "शिक्षक शिक्षा की मौजूदा प्रणाली को ओवरहाल या पुर्नोत्थान करने की आवश्यकता है।" इसके परिणामस्वरूप कई पहल शुरू की गई हैं और वे हैं-

 17 अगस्त, 1995 को भारत सरकार द्वारा शिक्षक शिक्षा के नियामक के साथ-साथ पेशेवर पहलुओं के लिए जिम्मेदार एक वैधानिक निकाय के रूप में एनसीटीई की स्थापना।

 1986-1990 के दौरान सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में केंद्र प्रायोजित योजना के रूप में स्कूली शिक्षकों के सामूहिक उन्मुखीकरण कार्यक्रम (पीएमओएसटी) की शुरुआत की गई थी।

प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों को उन्मुखीकरण प्रदान करने के लिए 1993-94 में प्राथमिक शिक्षकों के लिए विशेष अभिविन्यास कार्यक्रम (एसओपीटी) शुरू किया गया था।

 एनपीई 1986 की सिफारिशों के आलोक में, प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों और प्रमुखों के व्यावसायिक विकास के लिए ब्लॉक और क्लस्टर संसाधन केंद्र स्थापित किए गए थे।

 सेवाकालीन प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में कर्नाटक और मध्य प्रदेश में इंटरएक्टिव टेलीकांफ्रेंसिंग का सफलतापूर्वक प्रयास किया गया है।

 राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद (1978, 1988 और 1998) द्वारा शिक्षक शिक्षा पर तीन राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखाएँ निकाली गई हैं।

 आईसीटी साक्षरता प्राप्त करने के लिए, एनसीटीई ने 'आईटी साक्षरता' नामक एक सीडी-रोम तैयार की है।

 एनसीटीई ने प्रवेश लेने वाले शिक्षकों को हमारे संविधान में निहित मूल्यों से परिचित कराने की दृष्टि से 'मानवाधिकार और राष्ट्रीय मूल्यों' पर स्व-शिक्षण मॉड्यूल विकसित किया है।

सुझाव

उपरोक्त अवलोकन स्पष्ट रूप से इंगित करते हैं कि माध्यमिक स्तर पर शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम को इसकी नवीनता के संदर्भ में आलोचनात्मक रूप से जांचने की आवश्यकता है। यहां कुछ सुझाव दिए गए हैं जिनका उपयोग इन समस्याओं को दूर करने के लिए किया जा सकता है-

 यदि देश भर के सभी शिक्षा विभाग इस क्षेत्र में योगदान दें तो अभिनव अनुसंधान की पहचान की जा सकती है। वे समय-समय पर अपने संबंधित विभागों में किए गए अध्ययनों के शोध सार प्रस्तुत कर सकते हैं, जो वर्ल्ड वाइड वेब पर उपलब्ध कराया जा सकता है।

 प्रत्येक शिक्षक शिक्षक को विशिष्ट पहचान संख्या दी जा सकती है। यह शिक्षक शिक्षा में जनशक्ति नियोजन की सुविधा प्रदान करेगा।

 एक-दूसरे की नवीन प्रथाओं से सीखने के लिए सभी शिक्षक शिक्षा संस्थानों के बीच नेटवर्किंग होनी चाहिए।

विभिन्न शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों में सूक्ष्म शिक्षण, सूचना-प्रेमी, तकनीकी-शिक्षाशास्त्रीय, जीवन कौशल जैसे विभिन्न कौशलों को एकीकृत करके समग्र शिक्षक शिक्षा को साकार करने का प्रयास किया जाना चाहिए। संज्ञानात्मक विकास के साथ-साथ भावनात्मक परिपक्वता, साइको-मोटर विकास, स्वास्थ्य और पर्यावरण और अंतर-विषयक विकास पर पर्याप्त ध्यान दिया जाना चाहिए।

 व्यावसायिक शिक्षा के लगभग सभी क्षेत्रों जैसे कृषि, बागवानी, रेशम उत्पादन, में व्यावसायिक शिक्षक शिक्षा को मजबूत करना अनिवार्य है।

बिजली और इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की सर्विसिंग। नवोन्मेषी दृष्टिकोण विकसित करने की आवश्यकता है।

 सरकार, स्थानीय निकायों और संगठनों द्वारा संस्थानों को भौतिक सुविधाएं और धन पर्याप्त रूप से प्रदान किया जाना चाहिए।

 अभ्यास शिक्षण के इंटर्नशिप मॉडल को अपनाया जाना चाहिए।

 अभ्यास शिक्षण की शुरुआत में कुछ शिक्षक प्रशिक्षकों द्वारा दिए गए कुछ प्रदर्शन पाठों की पारंपरिक प्रणाली को विशेषज्ञ शिक्षक प्रशिक्षकों, शिक्षकों और शिक्षक प्रशिक्षुओं द्वारा दिए गए प्रत्येक विषय में कुछ वीडियो रिकॉर्ड किए गए अच्छे पाठों के प्रदर्शन से बदला जा सकता है।

 निर्देश के प्रासंगिक तरीकों जैसे कि ट्यूटोरियल, चर्चा संगोष्ठी, टीम शिक्षण और इंटरैक्टिव शिक्षण अधिगम को अपनाया जाना चाहिए।

 शारीरिक शिक्षा, सामाजिक सेवाओं, वृक्षारोपण और इको क्लब के गठन जैसी अधिक सह-पाठ्यचर्या संबंधी गतिविधियों का आयोजन किया जाना चाहिए।

 निर्देश के समय कंप्यूटर, वीडियो, मास मीडिया, ओएचपी जैसे आधुनिक तकनीकी उपकरणों का उपयोग किया जाना चाहिए।

 परामर्श और अनुवर्ती कार्यक्रम शुरू किए जाने चाहिए और उन्हें प्रभावी बनाया जाना चाहिए।

 शिक्षण कर्मचारियों को प्रबंधन में पर्याप्त प्रतिनिधित्व दिया जाना चाहिए।

 शिक्षक प्रशिक्षकों को मोबाइल बनाया जाना चाहिए ताकि वे अपने संस्थानों के बाहर अपनी पेशेवर दुनिया देख सकें।

 अभ्यास करने वाले स्कूलों, प्रशासकों, छात्रों-शिक्षकों, अभिभावकों और समुदाय से सेवा और समर्थन उत्साहजनक होना चाहिए।

 शिक्षक प्रशिक्षकों को पेशेवर विकास के लिए उचित प्रोत्साहन दिया जाएगा।

 संस्थानों द्वारा पेशेवर पत्रिकाओं के प्रकाशन और सदस्यता को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

 विश्वविद्यालय के विभागों और चयनित राजकीय महाविद्यालयों में अनुसंधान विंग शुरू की जानी चाहिए।

 शिक्षण कर्मचारियों के बीच एक स्वस्थ संबंध नई प्रक्रियाओं को विकसित करेगा और नए लक्ष्यों की ओर बढ़ेगा।

 संस्थानों के स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए प्रबंधन और प्रशासकों को सतर्क रहना चाहिए ताकि उन्हें अभिनव और प्रगतिशील बनाया जा सके। भारत में नई सहस्राब्दी, शिक्षक शिक्षा की चुनौतियों का सामना करने के लिए निष्कर्ष

निष्कर्ष

नवाचार में अनुसंधान आधारित ज्ञान और शिक्षा को एक ही सिक्के के दो पहलू के रूप में लेना है और नवाचार की संस्कृति को प्राप्त करने के लिए एकल नीति ढांचे के भीतर उनका एकीकरण आवश्यक है जो ज्ञान अर्थव्यवस्था को ऊर्जा और बनाए रखेगा। नई नीतियों और वैश्वीकरण की प्रक्रियाओं के मद्देनजर भारत में शिक्षक शिक्षा एक नए दांव पर है। भारतीय शिक्षक शिक्षा को खुद को नई चुनौतियों के प्रति उन्मुख करने और अपने विद्यार्थियों को प्रतिस्पर्धा स्तर के लिए सक्षम बनाने की आवश्यकता है।

संबंधित शिक्षा की धारा में नए कौशल और दृष्टिकोण के साथ-साथ प्रतिस्पर्धी ज्ञान रखते हुए समुदाय और भविष्य के नागरिकों को उच्च स्थान पर रखने की आवश्यकता है। यह सब शिक्षक शिक्षा में नवीन शिक्षण पद्धतियों के

अभ्यास से संभव हो सकता है। यदि शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में काम करने वाली विभिन्न संस्थाओं द्वारा नवीन शिक्षण पद्धतियों का प्रचलन हो रहा है और उन्हें बढ़ावा दिया जा रहा है, तो इस बात की पूरी संभावना है कि ये प्रथाएँ निश्चित रूप से अकादमिक बिरादरी का ध्यान आकर्षित करेंगी। बदले में, वे या तो शिक्षक शिक्षा में मौजूदा नवीन शिक्षण पद्धतियों का पालन करने के लिए पहल कर सकते हैं या अपने संबंधित संस्थानों में नवीन शिक्षण के नए मार्ग को छोड़ सकते हैं। नई सहस्राब्दी की चुनौतियों का सामना करने के लिए भारत में शिक्षक शिक्षा में जबरदस्त बदलाव की जरूरत है। शिक्षक-प्रशिक्षकों को नए नवाचारों से संबंधित विभिन्न पहलुओं में गहन प्रशिक्षण की आवश्यकता है। ऊपर बताई गई समस्याएं चुनौतीपूर्ण हैं और इन समस्याओं को दूर करने की रणनीति समय की मांग है। इसलिए एनसीटीई, एससीईआरटी/एसआईई और विश्वविद्यालय शिक्षा विभाग को शिक्षा प्रणाली को अभिनव बनाने के लिए तत्काल कार्रवाई करनी चाहिए। निराश होने की कोई बात नहीं है। भारतीय शिक्षा प्रवाह की स्थिति है। राष्ट्रीय दृष्टि मिशन निश्चित रूप से नवाचारों का पोषण करेगा जैसा कि शिक्षक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या (एनसीटीई, 2009) और शिक्षक शिक्षा: नीति निर्माण की दिशा में विचार (एनसीटीई, 2009) के उद्भव के माध्यम से स्पष्ट है।

संदर्भ

ब्लूम, बी.एस. (एड), 1964। टैक्सोनॉमी ऑफ एजुकेशनल ऑब्जेक्टिव्स: द क्लासिफिकेशन ऑफ एजुकेशनल गोल्स/ बाय अ कमेटी ऑफ कॉलेज एंड यूनिवर्सिटी एग्जामिनर्स, लंदन: लॉन्गमैन

क्रॉस पी.के. 1987, टीचिंग फॉर लर्निंग, एन असोक। हायर एडुक बुल 39:3-7.

ग्राइंडर एम। 1991। सूचना कन्वेयर बेल्ट की सवारी, पोर्टलैंड, या: मेटामॉर्फस

प्रतीक शाह, 2004। टीचिंग एंड लर्निंग इन हायर एजुकेशन, डोमिनेंट पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली।

हसन, डी. और राव, ए.वी. अप्पा, 2012. शिक्षक शिक्षा में नवाचार। एडुट्रैक्स, Vol.11, No.5।

करपगम, एस. और अनंतसयनम। आर. 2012. सॉफ्ट स्किल्स इन टीचर एजुकेशन प्रोग्राम। एडुट्रैक्स, Vol.11, No.11।

राही, पुनीत 2012. शिक्षण-अधिगम में नवाचार,

एडुट्रैक्स, Vol.11, No.11।

राव, रवि रंगा और राव, दिगुमारती भास्कर, 2004। शिक्षक प्रशिक्षण के तरीके। डिस्कवरी पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।

चेंग, वाई.सी. 2005. री-इंजीनियरिंग शिक्षा के लिए एक नया प्रतिमान: वैश्वीकरण, स्थानीयकरण और वैयक्तिकरण। डॉर्ड्रेक्ट, नीदरलैंड: स्प्रिंगर।

डैश, संकर्षण 2006। शिक्षक शिक्षा में गुणवत्ता सुधार: वर्तमान और भविष्य का विश्लेषण, एडुट्रैक्स, खंड 7 (9)

गोयल डी.आर. और छाया गोयल, 2010। शिक्षक शिक्षा में नवाचार, इंजीनियरिंग जर्नल, विज्ञान और प्रबंधन शिक्षा, वॉल्यूम। 1, पीपी.24-28